OM SHANTI MEDIA - JULY- II - 2022 DELHI FINAL FILE_Page 1 and 2 6/28/2022 9:37 AM Page 3

स्वार्थ शब्द का सही मायने में अर्थ...

लोग प्रायः यह शिकायत करते हुए सुने जाते हैं कि आजकल सभी स्वार्थी हैं। वे स्वार्थ को बुरा समझते हैं। इस कारण साधु, सन्यासी लोग भी उपदेश करते रहते हैं कि स्वार्थ का त्याग करना चाहिए; स्वार्थ दुःख देने वाला है। उनकी शिक्षा यही होती है कि 'निःस्वार्थ बनो'। परन्तु विवेक कहता है कि स्वार्थ और स्वार्थ सिद्धि करने की वास्तविक युक्ति को जान कर मनुष्य को स्वार्थी बनना चाहिए। यह बात बड़ी आश्चर्यजनक मालूम होगी परन्तु है यह पूर्णतया सत्य ही।

स्वार्थ क्या है?

प्रश्न यह है कि स्वार्थ है क्या? आप यदि विचार करें तो यह मालूम पड़ेगा कि मनुष्य के सभी कर्म जिन्हें 'स्वार्थ पूर्ण' कहा जाता है, सुख और शान्ति की प्राप्ति के अभिप्राय से किये गये होते हैं। आप मनुष्य का कोई भी कृत्य ऐसा न पायेंगे जो उसने जान-बूझ कर दुःख और अशान्ति भोगने के विचार से किया हो। तब निःस्वार्थ बनने के उपदेश का तो यही अर्थ हुआ कि मनुष्य सुख और शान्ति की इच्छा न करे। परन्तु यह तो असम्भव है। स्वयं सन्यासी तथा महात्मा लोग भी शान्ति ही की प्राप्ति के लिये पुरूषार्थ करते हैं। इसलिये सत्यता तो यह है कि मनुष्य को अधिक से अधिक 'स्वार्थी' बनना चाहिए। परन्तु सबसे अधिक सुख और शान्ति तो देवी-देवताओं को प्राप्त होती है। अतः हमारे कहने का अभिप्रायः यह है कि मनुष्य को जीवनमुक्त देवपद प्राप्त करने का स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए।

स्वार्थ स्वाभाविक है

आत्मा का वास्तविक स्वरुप तो है ही 'शान्त'। तब शान्त स्वरुप आत्मा भला 'शान्ति' स्वधर्म में स्थित न होना चाहे यह कैसे हो सकता है? शान्ति तो आत्मा का स्वभाव है। अतएव अशान्ति उत्पन्न होने पर शान्ति की इच्छा होना भी स्वाभाविक है। इसलिये यह कहना कि मनुष्य निःस्वार्थ अथवा निष्काम कर्म करे, निरर्थक है क्योंकि निःस्वार्थ अथवा निष्काम यानी सुख-शान्ति की इच्छा के बिना तो कोई भी कर्म नहीं किया जाता। 'स्व' आत्मा को कहते हैं और 'अर्थ' उद्देश्य को। बिना उद्देश्य के, आत्मा कोई कर्म करने का विचार ही भला कैसे कर सकती है!

स्वार्थ सिद्धि की युक्ति

परन्तु सम्पूर्ण सुख-शान्ति अथवा देवपद की प्राप्ति का तरीका अथवा उपाय लोग नहीं जानते– यह बात स्वीकार करने योग्य है। स्वार्थ

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

की युक्ति अथवा विधि न जानने के कारण ही मनुष्य का स्वार्थ सफल नहीं हो पा रहा। अब देखना यह है कि देवता सुखी और शान्त थे क्योंकि वे पवित्र थे। पवित्रता के कारण ही तो उनको देवता अर्थात् दिव्य कहा जाता है। इसलिए याद रहे कि पवित्रता के बिना तो सुख और शान्ति कहीं टिक ही नहीं सकते। इनको धारण करने वाली तो पवित्रता अर्थात् निर्विकारिता ही होती है। परन्तु धारण करने वाले ही को 'धर्मात्मा' कहा जाता है। इस कारण पवित्रता ही मनुष्य का धर्म है, जिससे मनुष्य जीवनमुक्त बन सकता है। पवित्रता से ही स्वार्थ(देवपद) सिद्ध हो सकता है। परन्तु यद्यपि आजकल मनुष्य स्वार्थी हैं तो भी वे न तो अपने स्वार्थ को पूर्ण रीति से जानते हैं और न ही निर्विकारी हैं। तभी कहा जाता है कि धर्म(स्वार्थ सिद्ध करने की युक्ति यानी पवित्रता) का और कर्म का तथा जीवन के लक्ष्य (स्वार्थ यानी देवपद) का ज्ञान प्राप्त करो क्योंकि बिना ज्ञान के मनुष्य मूर्ख होता है और मनुष्य अपना स्वार्थ (देवपद) सिद्ध करना नहीं जानता अथवा नहीं कर सकता।

स्वार्थ का ज्ञान

मनुष्य धन तो चाहता ही है क्योंकि धन से भी मनुष्य के अनेक काम संवरते हैं और वैभव भी प्राप्त होते हैं। 'धन' को 'अर्थ' भी कहा जाता है। परन्तु 'स्व' 'अर्थ' शब्द ही से स्पष्ट है कि पहले 'स्व' में टिकने से फिर अर्थ भी प्राप्त हो सकेगा अन्यथा 'स्व' के बिना यदि अर्थ प्राप्त हुआ भी तो वह स्व को सुख देने वाला न होकर दुःख देने वाला ही होगा। क्योंकि जब तक मनुष्य मनजीत(स्वजीत) अर्थात् देवता न बने तब तक वह श्रीमान अथवा श्रीयुत अर्थात् धन का मालिक भी नहीं हो सकता, बल्कि धन ही उसका मालिक बन बैठता है, कारण कि वह मनुष्य धन कमाने, लगाने, जोड़ने, संभालने, भोगने इत्यादि की चिन्ता में लगा रहता है।

योग से स्वार्थ सिद्ध

अब स्व में स्थित होना ही योग कहलाता है और योग का अर्थ है प्राप्ति (सुख-शान्ति की) अतः प्राप्ति के लिये यानी स्वार्थ-सिद्धि के लिये मनुष्य को योगाभ्यास करना चाहिए। योग ही सच्ची कमाई है जो जन्म-जन्मान्तर मनुष्यात्मा के साथ चलती है। अन्यथा योग के बिना तो सिकन्दर जैसे बादशाह भी यहाँ से खाली हाथ चले गये। अब प्राप्ति होती है सदा भण्डार से, सागर से, रत्नागर से अथवा सौदागर से। इसलिये स्वार्थ सिद्धि अथवा 'योग' परमपिता परमात्मा ही से हो सकती है क्योंकि वही शान्तिसागर, आनन्दसागर, सुख का भण्डार, ज्ञान-रत्नागर है और पुराना तन-मन-धन लेकर जन्म-जन्मान्तर के लिये देवताई तन-मन और धन अर्थात् जीवनमुक्ति देने वाला सच्चा सौदागर है। परन्तु यदि किसी को सौदागर का ज्ञान ही नहीं होगा अथवा सौदागर से उसका मेल ही नहीं होगा तो उसको प्राप्ति कैसे होगी? अतएव अब जबकि परमपिता परमात्मा जो कि सच्चा सौदागर है, स्वयं अवतरित हो ब्रह्मा के व्यक्त रुप द्वारा ज्ञान-रत्न देकर "सच्चा सौदा" करता है तो मनुष्य को चाहिये कि इस एक ही जन्म में, स्वधर्म अर्थात् पवित्रता में स्थित होकर, जन्म-जन्मान्तर के लिये स्वार्थ सिद्ध कर ले अर्थात् जीवनमुक्त देवपद, सुख शान्ति प्राप्त कर ले।

वाराणसी-उ.प्र.। देश के माननीय उप राष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू के शहर में आगमन पर वाराणसी के बीएलडब्ल्यू स्थित वी.वी.आई.पी. गेस्ट हाउस में माननीय उप राष्ट्रपति से मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए बजरडीहा एवं बीएलडब्ल्यू वाराणसी स्थित सेवाकेन्द्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज बहन एवं ब्र.कु. चंदा बहन। साथ ही माउण्ट आबू आने का निमंत्रण भी दिया।

कलायत-हरियाणा। पंजाब केसरी के वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप मित्तल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक भाई,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रेखा बहन तथा ब्र.कु. किरण बहन।

आजमगढ़-उ.प्र.। आई.एम.ए. के सभागार में डॉक्टर्स के लिए आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन द्वारा स्व-सशक्तिकरण' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला के दौरान आई.एम.ए. आजमगढ़ के सचिव डॉ. सी.के. त्यागी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रंजना दीदी। इस मौके पर राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. तापोशी बहन, जिला उद्यान अधिकारी बहन ममता यादव तथा शहर के अन्य प्रतिष्ठित डॉक्टर्स भी उपस्थित रहे।

भुवनेश्वर-ओडिशा। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के ओम निवास सेवाकेन्द्र में 'कम्पैशन एंड काइंडनेस इन द आई ऑफ लॉ' विषयक सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जस्टिस लक्ष्मीकांत महापात्रा,पूर्व चीफ जस्टिस,हाई कोर्ट ऑफ मणिपुर, प्रो. डॉ. प्रबीर कुमार पटनायक,एसओए नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ,फैकल्टी ऑफ लीगल स्टडीज़, ब्र.कु. गीता बहन तथा कैलाश कानुनगो,एडवोकेट,हाई कोर्ट ऑफ ओडिशा।

सादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव शक्ति भवन में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर कार्यक्रम एवं तम्बाकू सेवन से होने वाली गम्भीर बीमारियों के प्रति जागरुक करने के लिए शहर में रैली भी निकाली गई। इस दौरान समाजसेवी सोम वार्ष्णेय, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भावना बहन, अग्रवाल सभा के अध्यक्ष पीयूष अग्रवाल तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

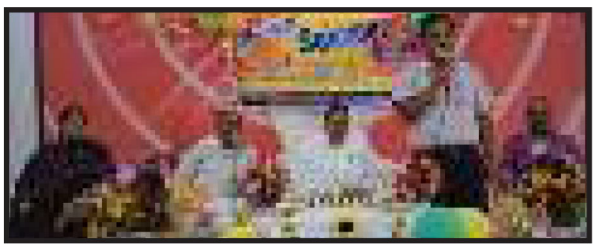

गया-सिविल लाइन(बिहार)। बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित त्रिदिवसीय 'समर कैम्प' में सम्बोधित करते हुए गया कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल भूषण पीडी। साथ हैं मगध यूनिवर्सिटी के एचओडी रामप्रवेश कुमार, मगध यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर गीता सहाय, राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी तथा अन्य।

दिल्ली-करोल बाग(पाण्डव भवन)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विपुल मोटर्स,मारुति सुजुकी,नेक्सा,गोकुलपुरी दिल्ली में कार्यशाला के पश्चात् समूह चित्र में महाप्रबंधक नीरज मिश्रा, ब्र.कु. रेनू बहन, ब्र.कु. अनुष बहन तथा अन्य।

दिल्ली-ओम विहार। निगम पार्षद ऑफिस में काउंसलर श्रीमति आभा चौहान को ब्रह्माकुमारीज़ के 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के विषय में बताने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला बहन।

किशनगंज-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सीमा सुरक्षा बल के 12वीं बटालियन में 'सकारात्मक विचारों से तनाव मुक्ति' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य वक्ता ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू, डिप्टी कमांडेंट साल्वे जी, सब इंस्पेक्टर प्रताप सिंह, ब्र.कु. सुमन बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. लोचन बहन, ब्र.कु. मोसंबी बहन, ब्र.कु. गणेश भाई तथा सीमा सुरक्षा बल के जवान।

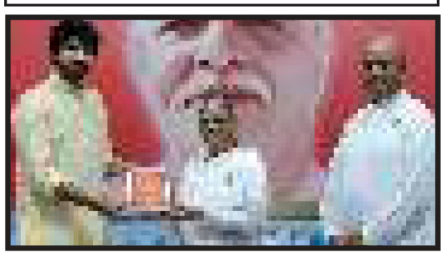

जम्मू। सेवाकेन्द्र पर आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान मृदुल राज आनंद,अभिनय में विशिष्ट थिएटर प्रैक्टिशनर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन दीदी। साथ हैं ब्र.कु. रविंदर भाई।

मालपुरा-जयपुर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जेल में आयोजित कार्यक्रम में राजयोग मेडिटेशन सिखाने के पश्चात् समूह चित्र में कैदी भाइयों एवं जेल स्टाफ के साथ ब्र.कु. जीत बहन, ब्र.कु. प्रियंका बहन व जेलर रामचंद्र शर्मा।

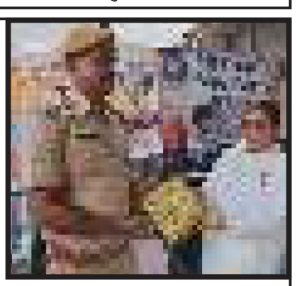

सांगानेर-जयपुर(राज.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'व्यसन मुक्ति चित्र प्रदर्शनी' के दौरान मालपुरा गेट थाना अधिकारी रायसर सिंह शेखावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए उप सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूजा बहन।